नवाङ्गी-वृत्तिकार श्री अभयदेवसूरि

[अगरचंद नाहटा]

सुविहित मार्ग प्रकाशक श्री जिनेश्वरसूरिजी के दो प्रधान शिष्य थे, एक संवेगशाला प्रकरणकर्त्ता श्री जिनचन्द्र-सूरि और दूसरे नवाङ्गी वृत्तिकर्त्ता श्री अभयदेवसूरि। श्री जिनेश्वरसूरिजी के पट्ट पर श्रीजिनचन्द्रसूरि और उनके पट्ट पर श्री अभयदेवसूरिजी प्रतिष्ठित हुए। आपके प्रारम्भिक जीवन के सम्बन्ध में प्रभावक चरित्र में लिखा है कि आचार्य जिनेश्वरसूरि सं० १०८० के पश्चात् जावालिपुर (जालोर) से विहार करते हुए मालव प्रदेश की राजधानी धारानगरी में पधारे। वहां आपका प्रवचन निरन्तर होता था। इसी नगरी में श्रेष्ठी महीधर नामक विचक्षण व्यापारी रहता था। उनकी पत्नी धनदेवी थी। अभयकुमार उनका सौभाग्य-शाली पुत्र था। आचार्य जिनेश्वरसूरि का व्याख्यान सुनने के लिए महीधर का पुत्र अभयकुमार भी आया करता था। आचार्यश्री के वैराग्यपोषक शांत रसवर्द्धक उपदेश से अभयकुमार प्रभावित हुआ और माता-पिता से अनुमति प्राप्त कर श्रीजिनेश्वरसूरि के पास दीक्षा ग्रहण की। उनका दीक्षा नाम अभयदेवमुनि रखा गया।

श्रीजिनेश्वरसूरि के पास ही स्व-पर शास्त्रों का विधिवत् अध्ययन अभयदेव ने किया। ज्ञानार्जन के साथ-साथ वे उग्र तपश्चर्या भी करने लगे। आपकी योग्यता और प्रतिभा को देखकर जिनेश्वरसूरि ने आपको संवत् १०८८ में आचार्य पद प्रदान किया।

उस समय के प्रमुख-प्रमुख आचार्य सैद्धान्तिक आगमों का अध्ययन छोड़कर आयुर्वेद, धनुर्वेद, ज्योतिष, सामुद्रिक, नाट्य शास्त्रादि विषयों में पारगत होते जा रहे थे। मंत्र, यंत्र और तंत्र विद्या के चमत्कारों से राजाओं व जनता पर भी उनका अच्छा प्रभाव जमता जाता था। आगमों के अभ्यास की परम्परा शिथिल हो जाने से बहुत से गुरु आम्नाय लुप्त हो गए और मूल पाठ भी त्रुटित और अशुद्ध होते जा रहे थे। ऐसी परिस्थिति को देख कर अभयदेवसूरि ने अपनी बहुश्रुतता का उपयोग उन आगमों पर टीकाएँ बनाने के रूप में किया। सं० ११२० से ११२८ तक यह कार्य निरन्तर चलता रहा। पाटण में आगमों की प्रतियां और चैत्यवासी आगम विज्ञ आचार्य का सहयोग सुलभ था। मध्य वर्ती समय में सं० ११२४ में आपने धवलका में रहते हुए बकुल और नंदिक सेठ के घर में पंचाशक टीका बनाई।

ठाणांग सूत्र से लेकर विपाक सूत्र तक नवाङ्गों की जो आपने टीका बनाई, उसका संशोधन उदारभाव से चैत्यवासी गीतार्थ द्रोणाचार्य से कराया जिससे वे सर्वमान्य हो गई।

अभयदेवसूरिजी के जीवन की दूसरी घटना स्तंभन पार्श्व-नाथ प्रतिमा को प्रकट करना है। कहा गया है कि टीकाएं रचने के समय अधिक परिश्रम और चिरकाल आयंबिल तप के कारण आपका शरीर व्याधिग्रस्त और जर्जरित हो गया। अनशन करने का विचार करने पर शासनदेवी ने कहा कि सेढी नदी के पार्श्ववर्ती खोखरा पलाश के नीचे भ० पार्श्वनाथ की प्रतिमा है। आपकी स्तवना से वह प्रतिमा प्रकट होगी। उस प्रतिमा के स्नात्रजल से आपकी सारी व्याधि मिट जायगी। शासनदेवीके निर्देशानुसार उन्होंने "जयतिहु-अण" स्तोत्र द्वारा भ० पार्श्वनाथ की प्रतिमा प्रगट की। आज भी यह स्तोत्र प्रतिदिन खरतरगच्छ में प्रतिक्रमण में बोला जाता है।

सुमतिगणि रचित गणधर सार्धशतक वृहद् वृत्ति, जिनोपालोपाध्याय कृत युगप्रधानाचार्य गुर्वावली, जिन-प्रभसूरि कृत विविध तीर्थकल्प एवं सोमधर्म रचित उपदेश-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सप्तति के अनुसार पार्श्वनाथ प्रतिमा का प्रकटीकरण होने के पश्चात् नवाङ्गी टीका रची गई थी और प्रभावक चरित्र, प्रबंधचिन्तामणि व पुरातन प्रबन्ध संग्रह के अनुसार नवाङ्गी टीका पूरी होने के बाद प्रतिमा का प्रकटन हुआ।

आचारांग और सूयगडांग दो आगमों पर शीलांकाचार्य की टीकाएं हैं, बाकी नवांग सूत्रों पर आपने टीका लिखकर जैन शासन की महान् सेवा की है। टीकाएं बहुत ही उपयोगी और महत्त्वपूर्ण है। इनके अतिरिक्त और भी बहुत से ग्रन्थ पंचाशक वृत्ति, व कई ग्रन्थों के भाष्य बनाये थे। आपके रचित कई स्तोत्र, प्रकरणादि भी प्राप्त हैं।

अभयदेवसूरिजी ने अनेक विद्वान तेयार किये, जिनमें से वर्द्धमानसूरि रचित आदिनाथचरित, मनोरमा आदि प्राकृत भाषा के महत्वपूर्ण ग्रन्थ रचे हैं। श्रीजिनवल्लभ गणि को आपने आगमादि का अभ्यास करवाके बहुत ही योग्य विद्वान और कवि बना दिया। इन जिनवल्लभसूरि की प्राप्त समस्त रचनाओं का संग्रह और उनका आलोचनात्मक अध्ययन महोपाध्याय विनयसागरजी ने किया है। उनके इस शोधकार्य पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने उन्हें महोपाध्याय पद से विभूषित किया है।

आचार्य अभयदेवसूरि सर्वगच्छमान्य थे। उनका चरित्र खरतरगच्छ की गुर्वावलि-पट्टावलियों के अतिरिक्त अन्य गच्छीय प्रभाचन्द्रसूरि ने प्रभावक-चरित्र में एक स्वतंत्र प्रबन्ध के रूप में ग्रथित किया है। इसी तरह तपागच्छीय सोमधर्म ने उपदेश-सप्तति में भी उनका प्रबन्ध लिखा है। पुरातन प्रबन्ध संग्रह में भी एक उनका प्रबन्ध प्रकाशित हुआ है। इन तीनों प्रकाशित प्रबन्धों के अतिरिक्त मेरुतुंगसूरि रचित स्तंभ पार्श्वनाथ चरित्र के अन्तिम प्रबन्ध में भी अभयदेवसूरि की कथा दी है। अप्रकाशित होने से उस कथा को नीचे दिया जा रहा है।

"प्रभावकपरम्परायां श्रीचन्द्रगच्छे श्रीसुविहित-शिरोवतंस वर्द्धमानसूरिनामा वढवाणनगरे विहारं कुर्वन्नाययौ। लब्धसोमेश्वरस्वप्नं सोमेश्वरनामा द्विजातिः, प्रभाते वर्द्धमानसूरिरूप ईश्वरोऽयं साक्षादेष भगवानाचार्यः। इति स्वप्नादेशप्रमाणेन प्रतिपद्यत्स्थां यात्रासम्पूर्णो मन्यमान आचार्यान्तिके शिष्यो जातः, पादाभिषिक्तः काले जातो जिनेश्वरसूरिनामा। तस्य शिष्यः श्रीमदभयदेवसूरिर्नवाङ्गवृत्तिकारः। सोऽपि कर्मोदयेन कुष्ठी जातः। श्रुतदेवतादेशात् दक्षिणदिग्विभागात् धवलक्कके समागत्य संघयात्रया श्रीस्तम्भ नायकं प्रणंतुं स सूरिरागतः। ११३१ वर्षे श्री स्तम्भनायकः प्रकटीकृतः। ग्रामभट्टेन बोहारेन सहीयड एष पूज्यमानः। प्रतिदिनं ग्रामभट्टकपिलया गवा निजोधस्यक्षरत् पयोधारया संजायमानस्नपनस्वरूपोऽभूत्। तदा च श्रीमदभयदेवसूरिणा जयतिहुअण द्वात्रिंशतिका सर्वजिनशासन भक्त दैवतगण प्रौढ़प्रतापोदयात् गुप्तमहामन्त्राक्षरा पेढे षोडशे च काव्ये स सूरिरशोकबालकुन्तल समपुद्गल श्री जिनस्वामी च पलाशवृक्षमूलात् आविरास। ततः शासनप्रभावको जातः। १३६८ वर्षे इदं च बिम्बं श्री स्तम्भ तीर्थे समायातो भविकानुग्रहणाय। इत्थं कालापेक्षया नानाभक्त्यै नाना नामग्राहं नानाभक्त्या पूजितोऽयं परमेश्वरः। सर्वार्थसिद्धिदाता जातस्तेषां द्वात्रिंशता प्रबन्धैर्बद्धं श्रीस्तम्भनाथ चरितमिदं। श्री पत्र द्विषोडशोऽभूत् बन्धोऽभयदेवसूरिकथा ॥ ३२ ॥

इति अमन्द जगदानन्द दायिनि आचार्य श्री मेरुतुंग-विरचिते देवाधिदेव माहात्म्य शास्त्रे श्री स्तम्भनाथ चरिते द्वात्रिंशत्प्रबन्धबन्धुरे द्वात्रिंशत्तमः प्रबन्धः समर्थितः। समाप्तं चेदं श्रीस्तम्भनाथचरितम्।

सं० १४१३ के उपर्युक्त प्रबन्ध में स्तम्भन पार्श्वनाथ के प्रकटीकरण का समय सं० ११३१ दिया है इससे नवांग-वृत्ति रचना के बाद ही यह घटना हुई—सिद्ध होता है। अभयदेवसूरिजी का स्वर्गवास सं० ११३५ या सं०११३६ में कपड़वंज में हुआ। खरतरगच्छ पट्टावली के अनुसार आप

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुर्थ देवलोक में हैं और तीसरे भव में मोक्षगामी होंगे यथा: —

"भणियं तित्थयरेहिं महाविदेहे भवंमि तइयम्मि ।
तुम्हाण चेव गुरुणो सिग्घं मुत्तिं गमिस्संति ॥१॥
कर्प्पटवाणिज्ये नगरे श्रीअभयदेवादिवम्
गताः चतुर्थ देवलोके विजयिनः सन्ति ।"

आचार्य श्रीअभयदेवसूरिजी की निम्नोक्त रचनाएँ प्राप्त हैं

१	स्थानांग वृत्ति (सं० ११२० पाटण)	१४२५०
२	समवायाङ्ग वृत्ति (सं० ११२० पाटण)	३५७५
३	भगवती वृत्ति (सं० ११२८ ,,)	१८६१६
४	ज्ञाता सूत्र वृत्ति (सं० १-२० विजया-दशमी, पाटण)	३८००
५	उपाशक दशा सूत्र वृत्ति	८१२
६	अंतकृद्दशा सूत्र वृत्ति	८९९
७	अनुत्तरोपपातिक सूत्र वृत्ति	१९२
८	प्रश्नव्याकरण सूत्र वृत्ति	४६००
९	विपाक सूत्र वृत्ति	९००
१०	उववाइ सूत्र वृत्ति	३१२५
११	प्रज्ञापना तृतीय पद संग्रहणी	१३३
१२	पञ्चाशक सूत्र वृत्ति (सं० ११२४ धोलका)	७४८०
१३	सप्ततिका भाष्य	१९२
१४	वृहद् वन्दनक भाष्य	३३
१५	नवपद प्रकरण भाष्य	१५१
१६	पंच निग्रन्थी	
१७	आगम अष्टोत्तरी	
१८	निगोद षट्त्रिंशिका	
१९	पुद्गल षट्त्रिंशिका	
२०	आराधना प्रकरण	गा० ८५
२१	आलोयणा विधि प्रकरण	गा० २५
२२	स्वधर्मी वात्सल्य कुलक	
२३	जयतिहुअण स्तोत्र	गा० ३०
२४	पार्श्वबस्तु स्तव [देवदुत्थिय]	गा० १६
२५	स्तंभन पार्श्व स्तव	गा० ८
२६	पार्श्व विज्ञप्तिका (सुरनर किन्नर०)	गा०
२७	विज्ञप्तिका (जेसलमेर भण्डार)	प० २६
२८	षट् स्थान भाष्य	गा० १७३
२९	वीर स्तोत्र	गा० २२
३०	षोडशक टीका	पत्र ३७
३१	महादण्डक	
३२	तिथि पयन्ना	
३३	महावीर चरित (अपभ्रंश)	गा० १०८
३४	उपधानविधि पंचाशक प्रकरण	गा० ५०

आचार्य अभयदेवसूरि के महत्त्व को व्यक्त करते हुए द्रोणाचार्य कहते हैं :—

आचार्याः प्रतिसद्म सन्ति महिमा येषामपि प्राकृते,
मीतुं नाऽभ्यवसीयते सुचरितैस्तेषां पवित्रं जगत् ।
एकेनाऽपि गुणेन किन्तु जगति प्रज्ञावनाः साम्प्रतं,
यो धत्तेऽभयदेवसूरिसमतां सोऽस्माकमावेद्यताम् ॥

[युग प्रधानाचार्य गुर्वावली पृ० ७]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org